राजस्थान ओलिव कल्टीवेशन लिमिटेड

कृषको के खेतो पर जैतून पौधारोपण कार्यक्रम

पौधो रोपण से एक वर्ष के लिये तकनीकी दिशा– निर्देश

1. सेवाप्रदाता संस्था कृषको को जैतून की खेती के बारे में जानकारी प्रदान करे। कृषक से चर्चा के दौरान जैतून की खेती का इतिहास, महत्व, राजस्थान में इसका परीक्षण, परिणाम, आर्थिक विश्लेषण, राजस्थान सरकार द्वारा राष्ट्रीय कृषि विकास योजना अन्तर्गत उपलब्ध करवाया जा रहा अनुदान एवं तकनीकी सहायता, भविष्य आदि विषयो के बारे में अवगत करावें।
2. कृषक को प्रेरित करे कि उसके नजदीकी क्षेत्र में लगाये गये जैतून के उद्यानो का भ्रमण करे एवं जैतून की खेती की प्रगति के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त कर संतुष्ट हो लेवें।
3. कृषक जैतून की खेती हेतु तैयार होने पर उससे निर्धारित आवेदन पत्र प्राप्त करे। आवेदन पत्र प्राप्त करते समय यह जॉच ले कि आवेदन पत्र के साथ निम्न दस्तावेज आवश्यक रूप से संलग्न हो –

   - अनुदान प्राप्त करने का निर्धारित प्रार्थना --पत्र
   - प्रार्थना पत्र के समस्त कॉलमो में स्पष्ट अक्षरो में वांछित सूचनाए अंकित की गयी हो।
   - प्रार्थना पत्र पर आवेदक की नवीनतम फोटो चिपकी हो।
   - भूमि एवं पानी की नवीनतम विश्लेषण रिर्पोट ।
   - जैतून के उद्यान स्थापित करने के लिये कृषक द्वारा चयनित भूमि की नवीनतम (छः माह से अधिक पुरानी ना हो) जमाबन्दी / पासबुक की छाया प्रति ।
   - निर्धारित कृषक हिस्सा राशि। (प्राथमिक रूप से चयन होने पर)
   - कृषक का धोषणा –पत्र (सादे कागज पर)

प्रशासनिक प्रकिया –

1. कृषक का आवेदन पत्र राजस्थान ओलिव कल्टीवेशन लिमिटेड में प्रस्तुत करे एवं प्राथमिक रूप से किसान का चयन होने पर कृषक से निधारित कृषक हिस्सा राशि प्राप्त करे।
2. किसान का प्राथमिक रूप से चयन होने के पश्चात ड्रिप संयत्र स्थापना हेतु किसान को प्रेरित करे। इसके लिये उद्यान विभाग, राजस्थान द्वारा पंजीकृत ड्रिप कम्पनियो के प्रतिनिधि से किसान की वार्ता करवावें तथा आवश्यकता के अनुरूप ड्रिप अवयवो (कम्पोनेन्ट) का चयन करने में किसानो की मदद करें।

Chief Operation Offcer
Rajasthan Olive Cultivation Limited
Rajasthan, Jaipur

भूमि का चयन एवं तैयारी

1. जैतून के खेती के लिये उपयुक्त जल निकास वाली भूमि का चयन किया जाना चाहिए।
2. पानी के भराव वाले क्षेत्र, जैतून की खेती के लिये उपयुक्त नहीं पाये गये है।
3. पथरीला एवं छोटे कंकड वाला क्षेत्र जैतून कर खेती के लिये उपयोग अधिक उपयोगी होता है।
4. चयनित क्षेत्र पर कम से कम 1 मीटर गहराई तक चटटान नहीं होनी चाहिए।
5. भूमि का वैज्ञानिक विधि से नमूना एकत्रित कर इसके विश्लेषण हेतु प्रयोगशाला में भिजवावें।
6. प्रयोगशाला में विश्लेषण हेतु आवेदन के समय निम्न अवयवो की जॉच के लिये आवेदन करे –

   PH, EC, Organic Carbon, P, K, Ca, Mg, Na, Bo, Zn, S, SAR, Bio-Carbonate of Na & Ca
7. चिकनी एवं भारी मिटटी वाले क्षेत्रो में 2 फुट उचॉई एवं 2 फुट चौडॉई की मेड बनाकर पौधो का रोपण करना लाभदायक होता है। ऐसे क्षेत्रो मे ट्रेक्टर की सहायता से मेडो का निर्माण कार्य पूर्ण करवाया जाना चाहिए।
8. अच्छे जल निकास वाली भूमि पर मेंड बनाने की आवश्यकता नहीं होती है।

सिंचाई व्यवस्था –

1. जैतून की खेती के लिये ड्रिप सिंचाई सयंत्र की स्थापना आवश्यक है।
2. जैतून का वृक्ष पानी की कमी की स्थिति को सहन कर सकता है, लेकिन लम्बे समय तक सूखे की स्थिति बनी रहने से उपज पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है। विभिन्न अध्ययनों में इंगित किया गया है कि पूर्ण विकसित जैतून के वृक्षों के लिए 0.3 से 0.5 दैनिक पैन वाष्पीकरण (Pan Evaporation) पूर्ति की आवश्यकता होती है। ऐसे में सिंचाई के स्त्रोत की महत्ती आवश्यकता है।
3. सिंचाई के स्त्रोत की जानकारी के पश्चात इसकी मात्रा को नाप जाना चाहिए। ताकि सिंचाई की योजना का निर्धारिण तदानुसार किया जाना चाहिए।
4. भूमि एवं पानी की विश्लेषण रिर्पोट देखें तथा यदि भूमिगत पानी काम में लिया जा रहा है तो लगभग आधा धंटा नलकूप चलने के पश्चात पानी का नमूना लेवें। प्रयोगशाला में निम्न अवयवो की जॉच करावें –

   PH, EC, Ca, Na, Bio-Carbonate of Na & Ca

Chief Operation Offcer
Rajasthan Olive Cultivation Limited
Rajasthan, Jaipur

5. विशेषज्ञो के अनुसार जैतून की खेती के लिये प्रयोग में लिये जाने वाले पानी की ईसी अधिकतम 3.5–4.0 एवं पी. एच. मान लगभग 7–7.5 तक होना चाहिए।

ड्रिप सयंत्र की स्थापना

1. कतार से कतार की दूरी 6–7 मीटर की रखें एवं पौधे से पौधे की दूरी 3 मीटर रखें।
2. किसान अपनी सुविधा के आधार पर इनलाईन अथवा आन लाईन ड्रिपर का चयन कर सकता है।
3. ड्रिपर का चयन करते समय भूमि की किस्म का आवश्यक रूप से ध्यान में रखे।
4. सामान्यतः प्रति धंटा लगभग दो लीटर पानी के डिस्चार्ज के ड्रिपर उपयुक्त पाये गये है लेकिन भूमि की किस्म, पानी की उपलब्धता, पानी की किस्म आदि कारको को ध्यान में रखकर ही उपयुक्त प्रकार के ड्रिपर का चयन किया जाना चाहिए।
5. विशेषज्ञो के अनुसार प्रत्येक 50 सेमी की दूरी पर 2 LPH ड्रिपर का विन्यास उपयुक्त पाया गया है।
6. ढलान वाले क्षेत्रो के लिये Pressure Compensatory ड्रिपर की सलाह देवें।
7. ढलान वाले क्षेत्रो पर कन्टूर पर लेटरल की स्थापना की जानी चाहिए।
8. ड्रिप निर्माता कम्पनी के प्रतिनिधि से जैतून की सिंचाई की अधिकतम आवश्यकता 30–40 M3/Ha. के अनुरूप पाईप एवं लेटरल की डिजायन प्राप्त करें ।
9. प्राप्त ड्रिप सयंत्र डिजायन का अध्ययन करे एवं आवश्यक होने पर विशेषज्ञ से चर्चा कर कृषक को समुचित सलाह देवें।
10. ड्रिप सयंत्र स्थापना हेतु चयनित कम्पनी को निर्देशित करावें एवं कृषक को सलाह देवें कि सयंत्र स्थापना के समय किन–किन बातो का ध्यान रखा जावें जैसे पाईप की गहराई, लेटरल की लाईन, गुणवत्ता नियत्रंण आदि
11. लेटरल लाईन को सीधा करावें तथा इनके अंतिम सिरे को एक खूटी के माध्यम से साईकिल की टयूब जैसी सामग्री से बांध देवे ताकि तापमान में बदलाव के कारण ड्रिपर का स्थान नहीं बदले।
12. ड्रिप सयंत्र स्थापना होने के पश्चात सभी पाईप को फलश करावें तथा सयंत्र को 2–3 धंटे तक चलावें।
13. ड्रिपर से पानी के निकास (Discharge) को चार–पॉच जगह से नापे ताकि ड्रिप सयंत्र से समान पानी के निकास की जॉच हो सके। इसके लिये लेटरल के हैड एवं टेल पर ड्रिपर के डिस्चार्ज को एक निश्चित अवधि तक एकत्रित करे एवं इसको नापे।
14. वैन्चुरी का कैलीबेशन करे ताकि पौध सरंक्षण रसायन एवं खाद देते समय इसका ध्यान रखा जा सकें इसके अनुसार ही वैन्चुरी की नोब पर निशान बना देवें।
15. किसान को ड्रिप सयंत्र के रखरखाव हेतु आवश्यक जानकारी ड्रिप निर्माता कम्पनी से प्राप्त करने हेतु मार्गदर्शन देवें।

Chief Operation Offcer
Rajasthan Olive Cultivation Limited
Rajasthan, Jaipur

जैतून के उद्यानो का विन्यास

1. जैतून एक परपरागित फसल है, तथा इसके अच्छे फलन के लिये उद्यान में तीन से चार विभिन्न किस्मों का रोपण किया जाना नितांत आवश्यक है। एक ही किस्म के पौधे रोपण करने से जैतून के फलन बहुत अधिक प्रभावित होता है एवं फलन नहीं के बराबर होता है।
2. कृषको को किस्मवार जैतून के पौध रोपण हेतु मार्गदर्शन करे ताकि फलो की तुडवाई के समय फलो के मिश्रण की समस्या से बचा जा सकें।
3. एक हेक्टेयर के मॉडल का विवरण निम्न प्रकार से है –

जैतून की ज्यामिति कतार से कतार की दूरी 6 मीटर एव पौधे से पौधे की दूरी 3 मीटर

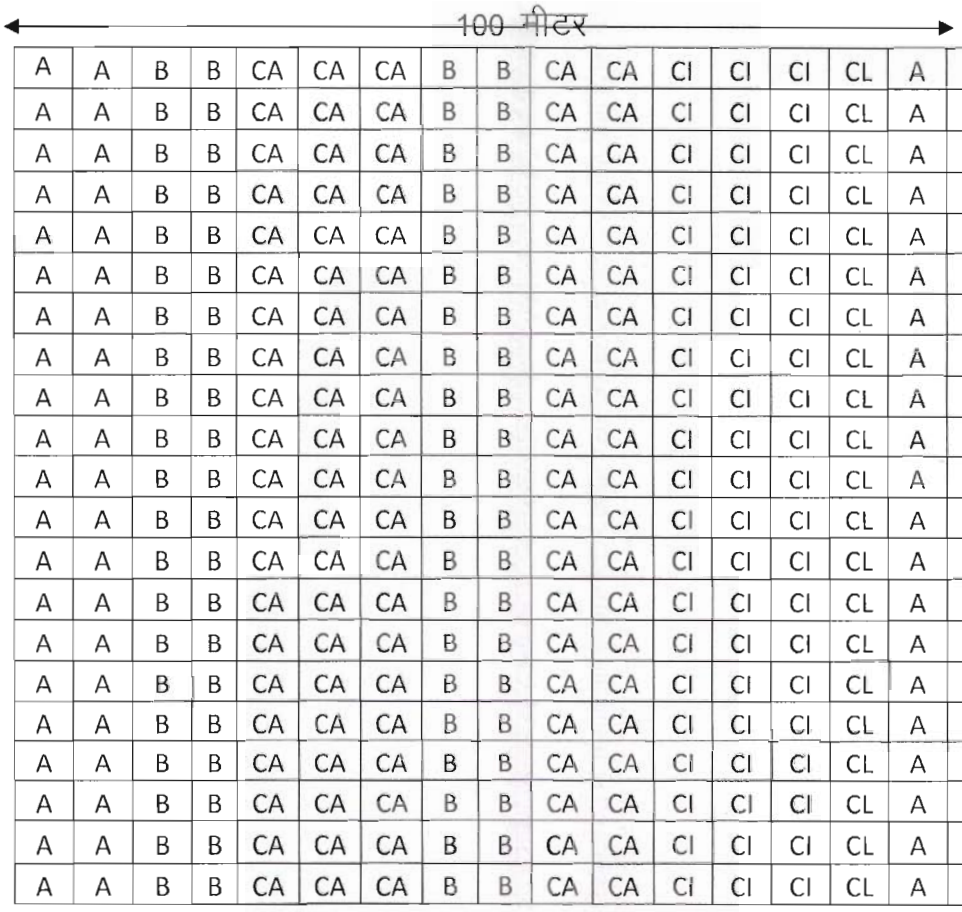

किस्म	किस्म का कोड	कतारो की संख्या	विन्यास
Barnea	B	4	3-4 & 8-9
Cortina	CA	5	5-7 & 10-11
Arbequina	A	4	1-2 & 16-17
Koroneiki	CI	4	12-14
	योग	17	

Chief Operation Offcer
than Olive Cultivation Limited
Rajasthan, Jaipur

जैतून की ज्यामिति कतार से कतार की दूरी 7 मीटर एव पौधे से पौधे की दूरी 3 मीटर

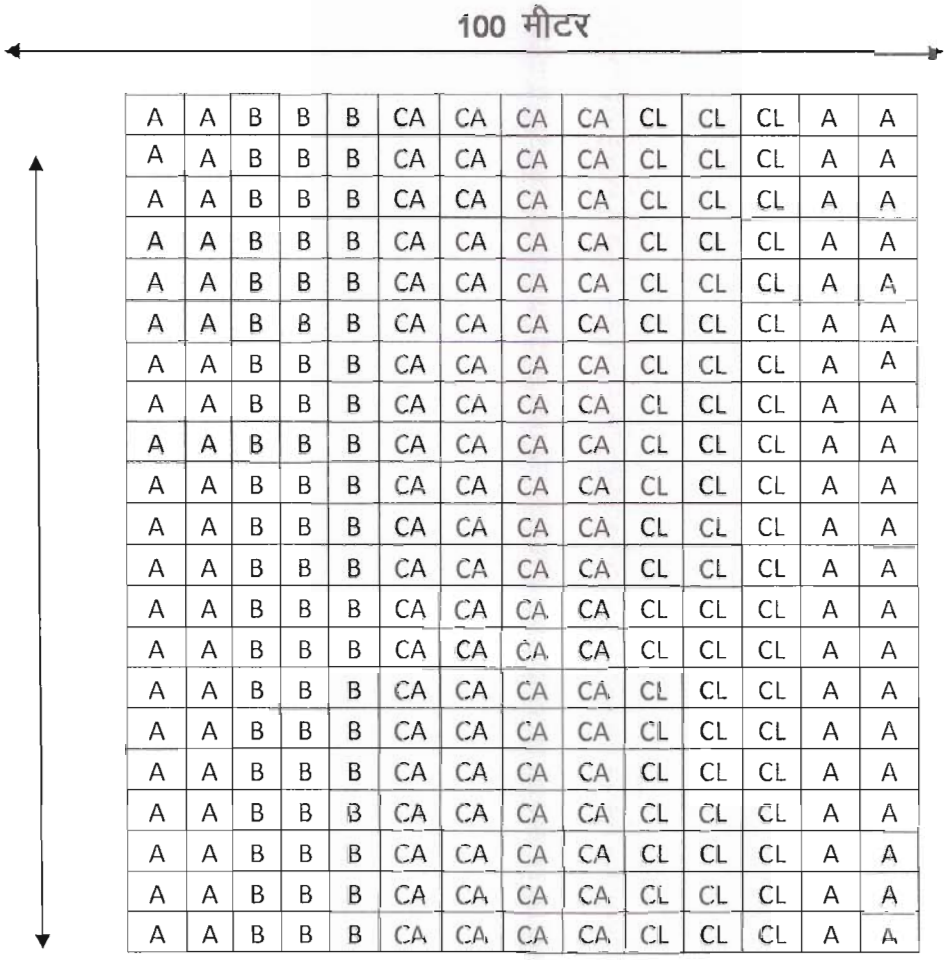

किस्म	किस्म का कोड	कतारो की संख्या	विन्यास
Barnea	B	3	3-5
Cortina	CA	4	6-9
Arbequina	A	4	1-2 & 13-14
Koroneiki	Cl	3	10-12
	Total	14	

उपरोक्तानुसार मॉडल सांकेतिक है तथा खेत के आकार के अनुसार किस्मो का विन्यास में बदलाव विशेषज्ञो की सलाह पर किया जा सकता है।

4. लेटरल की लम्बाई के आधार पर जैतून के किस्मवार पौधो की आवश्यकता राजस्थान ओलिव कल्टीवेशन लिमिटेड के माध्यम से संबधित नर्सरी को सूचित करे।

5. किस्मवार पौध रोपण की सिफारिशो के अनुसार खेत का नक्शा तैयार करे।

Chief Operation Officer
Rajasthan Olive Cultivation Limited
Rajasthan, Jaipur

6. जैतून का परागण वायु के माध्यम से होता है ऐसे में एक हेक्टेयर क्षेत्र मे एक से अधिक सामान्यतः 4 किस्मो का रोपण किया जाना चाहिए ताकि परागण के समय वायु में अधिक मात्रा में परागकण उपलब्ध हो।

पौधे लगाने की विधि

1. जैतून की रोपाई के लिए 60 X 60 X 60 सें.मी. आकार के गड्ढे पर्याप्त रहते हैं। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में गडडो की गहराई अधिक रखनी चाहिए।
2. प्रत्येक गड्ढे में 10 से 15 किलो सड़ी गोबर की खाद या 3 किलो वर्मी कम्पोस्ट मिट्टी में मिलाने के बाद पौधो की रोपाई करनी चाहिए।
3. दीमक के प्रभाव वाले क्षेत्रो में कीटनाशको (50–100 ग्राम क्यूनालफास चूर्ण अथवा क्लोरोपाईफास, इमिडाक्लोरोपिड दवा आदि) का प्रयोग किया जाना चाहिए।
4. सामान्यतः तौर पर क्षारीय भूमि में 1.5–2 किलोग्राम जिप्सम प्रत्येक गढढे में मिलाया जाता है, लेकिन जिप्सम की मात्रा भूमि की जॉच रिर्पोट के आधार पर निर्धारित की जानी चाहिए।
5. उपरोक्तानुसार खाद, जिप्सम, दीमक की दवा आदि को मिलाकर गढढे को भर देवें तथा लगभग एक – दो धंटे तक ड्रिप सयंत्र को चालू करें ताकि गढढे की मिटटी अच्छी तरह से जम जावें। आवश्यकता होने पर अधिक समय तक ड्रिप सयंत्र को चलावें।
6. इसके पश्चात एवं पौधे रोपण से एक दिन पूर्व लगभग 20 X 20 सें.मी. आकार के गढढे पूर्व में खोदे गये गढढे के मध्य में खोदे। इस प्रकार के गढढे खोदते समय यह ध्यान रखे कि पौधे की कतार सीधी रहे। इस हेतु रस्सी का उपयोग किया जाना उचित रहता है।
7. पौधे प्राप्ति के दिनांक से पूर्व एक से अधिक रस्सियॉ जिसकी लम्बाई खेत में स्थापित की गयी लेटरल से लगभग 5–6 मीटर अधिक हो तैयार की जानी चाहिए। जिस पर पौधे से पौधे की दूरी के बराबर के निशान लगे हुये हो।
8. पौधे रोपण के एक दिन पूर्व उक्त प्रकार की रस्सियॉ की तीन लाईन खेत में पूर्व से ही बिछा देनी चाहिए।
9. पोलीथीन की थैली को काटने के लिये ब्लेड अथवा चाकू की व्यवस्था आवश्यकता के अनुसार कर ले।
10. पौधे कार्टून बक्से में प्राप्त होगें। पौधे प्राप्त होते ही उपयुक्त छायादार स्थान पर बक्से को उपर से खोले तथा पौधो को सीधे खडे कर उन पर पानी का छिडकाव करें।
11. किस्मवार पौधो को एक जगह रखे ताकि किस्मो का मिश्रण होने से बचा जा सकें।
12. पूर्व में तैयार किये गये किस्मवार पौधरोपण के नक्शे की प्रति साथ में रखे तथा स्वयं के समक्ष निर्धारित कतार में किस्मवार पौधे का वितरण गढढे के नजदीक करावें।
13. पौधे वितरण के समय यह ध्यान में रखे कि खेत में पौधे 3–4 धंटे से अधिक इस अवस्था में नहीं रहें। अतएवं श्रमिको की उपलब्धता के अनुसार पौधो की संख्या का चयन करें।

Chief Operation Officer
Rajasthan Olive Cultivation Limited
Rajasthan, Jaipur

14. पौधे यदि पोलीथीन थैली में प्राप्त होते है तो ही उपरोक्त प्रकिया अपनायी जावें अन्यथा पौधे सीधे ट्रे से निकालकर गढढे में रख देवें।
15. पौघे लगाने से पूर्व यह जॉच ले कि रस्सी सीधी एवं तनाव में है।
16. पौधरोपण से पूर्व श्रमिको को पौधरोपण का प्रशिक्षण देवें जिसमें निम्न प्रकार से चरण आवश्यक रूप से शामिल करे –

    - पोलीथीन को नीचे की और से गौलाई में काटना।
    - इसके पश्चात लम्बाई में काटना।
    - पोलीथीन को उपर से निकालना।
    - जडो की बॉल को इस प्रकार से संभालना की पौधे की जडे टुटे नहीं।
    - पौधे को रस्सी से लगते हुये गढढे में सावधानी से सीधा रखना एवं पास रखी हुयी गढढे की मिटटी से भर कर इस प्रकार से दबाना की पौधे की जडे टुटे नहीं। ध्यान रहे कि सारे पौधे एक ही रस्सी के एक ही तरफ लगाये जावेगें।

17. पौधे लगाने के बाद 3 धंटे तक ड्रिप सयंत्र चालू रखना ताकि पौधे के आस पास की भूमि पूरी तरह से गीली हो जावें। यह सिफारिश 2 LPH ड्रिपर के समकक्ष दी गयी है।
18. यदि गढढे भरते समय दीमक का उपचार नहीं किया गया है तो पौधे रोपण के दूसरे दिन दीमक की दवा वैन्चुरी के माध्यम से देवें। इसके लिये 3 मिली इमिडाक्लोरोपिड अथवा क्लोरोपायीफास का उपयोग किया जा सकता है।
19. पौधे लगाने के पश्चात उनको सीधा रखने के लिये बॉस अथवा सीधी मजबूत लकडी लगभग 6 फिट लम्बाई की सहायता से पौधो को सहारा देवें।

उपरोक्त तकनीकी जानकारी सांकेतिक है तथा परिस्थितियो एवं फसल अवस्था के आधार पर तदानुसार बदलाव किया जा सकता है।

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करे –

राजस्थान ओलिव कल्टीवेशन लिमिटेड

राज्य स्तरीय कृषि प्रबंध संस्थान

कृषि अनुसंधान केन्द्र, दुर्गापुरा, जयपुर

दूरभाष – 0141–2554106

फैक्स – 0141–2553506

ई–मेलः rocl@rajolive.com; sdm@rajolive.com

Chief Operation Offcer
Rajasthan Olive Cultivation Limited
Rajasthan, Jaipur

राजस्थान ओलिव कल्टीवेशन लिमिटेड

जैतून पौधारोपण कार्यक्रम

पौध रोपण से एक वर्ष के लिये तकनीकी दिशा–निर्देश

पौधो का सहारा देना

1. पौधे इस समय वृद्वि की अवस्था में है। यह ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि पौधे सीधे खडे हो एवं इनको पर्याप्त एंव मजबूत सहारा उपलब्ध हो।
2. पौधो को सहारा देने एवं सीधा रखने के लिये बॉस अथवा सीधी मजबूत लकडी (लगभग 6 फिट लम्बाई एवं 1 से 1.5 ईन्च मोटाई) का उपयोग प्रथम दो वर्षो तक किया जाना चाहिए।
3. बॉस अथवी सीधी मजबूत लकडी को पौधे के समीप गाडने से पूर्व उनका दीमक से बचाव का उपचार किया जाना आवश्यक है ताकि बॉस अधिक समय तक सुरक्षित रह सकें।
4. बॉस के उपचार के लिये उपयोग में लाये हुये ऑयल, दीमकनाशी दवा, डामर आदि का प्रयोग किया जाना चाहिए।
5. क्लोरोपायीफास दवा को 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से मिलाकर धोल बना लें। इस धोल में बॉस का 2 फिट हिस्सा लगभग 30 मिनिट तक डुबाया जावें।
6. इसके पश्चात काम में लिये हुये ऑयल अथवा गर्म डामर के धोल में बॉस के उसी हिस्से को डुबो कर ही बॉस को जमीन में गाढें।
7. बॉस जमीन में इस प्रकार से गाढा जावें कि पौधे के समीप हो एवं पौधो को सीधा रखने में सहायक हो।
8. इसके पश्चात पौधो के तने को धागे की सहायता से बॉस पर दो–तीन जगह से बांध देवें। धागा ढीला रहना चाहिए तथा समय समय पर इसका निरीक्षण करे ताकि पौधे के तने को किसी प्रकार का नुकसान नहीं हों।

खतपतवार नियत्रंण

9. खतपतवारो का नियत्रंण आवश्यक है। ये पौधो को उपलब्ध करवाये गये जल एवं पोषक तत्वो को उपयोग करते है तथा पौधो की बढवार में बाधक होते है।
10. पौधो के दोनो और की 50 सेमी. की जगह खतपतवार से मुक्त रखी जानी चाहिए। दूसरे शब्दो में कतार को पूरी तरह से खतपतवार से मुक्त रखा जाना चाहिए। ताकि समय समय पर ड्रिपर का निरीक्षण किया जा सकें।
11. पौघरोपण से एक वर्ष तक खतपतवारनाशी के उपयोग से बचाना चाहिए। खतपतवारो को हाथ की सहायता से निकाल देवें। इस बात का ध्यान रखे कि पौधे की जडे को नुकसान ना हो।

पौधो की प्रूनिंग

Chief Operation Officer
Rajasthan Olive Cultivation Limited
Rajasthan, Jaipur

12. जैतून के पौधो को समुचित आकार दिये जाने के लिये समय पर प्रूनिंग किया जाना आवश्यक है।
13. पौधो की प्रूनिंग के लिये पौधो को लगभग 120 सेमी. तक बढाने के पश्चात उसकी उपरी भाग को अंगूठे तथा अगुँली की मदद से तोड देना चाहिए। ताकि 70 सेमी उचॉई के पास से विभिन्न शाखाये निकल सकें।
14. सामान्यतः तौर पर 4 से 5 शाखाये जैतून के पौधे में निकलती है जिससे पौधो का आकार बनता है। आगामी वर्षो में इन्ही शाखाओ के कारण पौधो का आकार निर्धारित होता है।
15. प्रूनिंग के समय यह ध्यान रखे कि पत्तियो का धनत्व पौधो की कुल उचॉई का लगभग 50–60 प्रतिशत तक हों।
16. तना पौधे की कुल उचॉई का लगभग 40 प्रतिशत हों।
17. तने पर सीधा सूर्य का प्रकाश नहीं पडे अन्यथा तने को नुकसान हो सकता है।
18. वे शाखाये जो आपस में टकरा रही है अथवा भूमि की और बढवार में है को भी काट देना चाहिए क्योंकि इस प्रकार की शाखाये किसी भी प्रकार से लाभदायक नहीं होती है।

सिंचाई व्यवस्था

19. एक वर्ष तक के पौधो का आकार कम होने के कारण उचित सिंचाई प्रबंधन की महती आवश्यकता है। जैतून के पौधे इस अवस्था में सूखे को सहन करने में असमर्थ होतें है।
20. प्रतिदिन सिंचाई करना अधिक लाभदायक होता है लेकिन यदि अन्य कारणो से ऐसा संभव नहीं हो सके तो सप्ताह में दो बार आवश्यक रूप से पौधो को पानी उपलब्ध करावें।
21. सिंचाई का प्रबंध इस प्रकार से करे कि भूमि में पानी की मात्रा ना अधिक हो और ना ही कम हो। भूमि नम हो तथा पानी का बहाव एवं ठहराव बिलकुल नहीं हों।
22. सामान्यतः प्रति पौधे सिंचाई की मात्रा विभिन्न कारक जैसे भूमि, जलवायु पौधे की अवस्था के अनुसार निर्धारित की जाती है। फिर भी एक मोटे अनुमान के तौर पर प्रति पौधा सिंचाई की मात्रा 3–5 लीटर प्रति दिन होती है। किसानो का इस मात्रा का उपयोग किये जाने से पूर्व अन्य दशाओ को भी जॉच लेना चाहिए।
23. यदि भूमि में लवण की मात्रा अधिक है (EC 3 से अधिक) होने पर समय समय पर नमक की सान्द्रता को बहाव के माध्यम से कम करना आवश्यक है।
24. भूमि की pH अधिक होने पर पानी में गंधक का तेजाब का मिश्रण किया जाना लाभदायक होता है। इस हेतु किसान भाई नलकूप को आधा घंटा चलाकर एक लीटर पानी को एक बर्तन में ले लेवें। पी एच मीटर की सहायता से पानी का मान ज्ञात कर लेवें तथा इस पानी की मात्रा में गधक के तेजाब की उस मात्रा को मिलावें जब तक की पानी की पीएच मान 6.0 हो जावें। इस प्रकार ज्ञात की गयी गंधक के तेजाब की मात्रा को कुल सिंचाई के पानी की मात्रा में मिला कर सिंचाई करें।

Chief Operation Offcer
Rajasthan Olive Cultivation Limited
Rajasthan, Jaipur

पौध संरक्षण के उपयोग के समय सावधानियॉं –

1. छिडकाव से पूर्व कीट अथवा व्याधि की पहचान करना।
2. स्प्रेयर को ठीक प्रकार से निरीक्षण कर लें जैसे रिंग, सील, नोजल आदि
3. दवा का उपयोग करने से पूर्व सही मात्रा में दवा की आवश्यक मात्रा की गणना लेवें तथा तदानुसार ही पैंकिग को खोलें।
4. त्वचा विशेष तौर पर ऑख एवं मुह के सक्रमंण से बचे।
5. तरल प्रदार्थ सावधानी से डाले।
6. अधिक हवा, अधिक तापमान और वर्षा में छिडकाव नहीं करें।
7. जब छिडकाव कर रहे हो तो इस समय कभी ना खाये, ना पीये और ना ही धुमप्रान करें।
8. फसल पर छिडकाव सही गति एवं सही दाब द्वारा करें।
9. छिडकाव के पश्चात टेंक में बचे रसायन को व्यर्थ भूमि पर गढढा खोदकर डालें।
10. कभी भी सिंचाई नहर या तालाब में टेंक को खाली ना करें।
11. हमेशा औजारों को अच्छी तरह साफ करें। प्रयोग के बाद इन्हे साफ करके ही सग्रंह कक्ष में रखें।
12. खाली रसायनो के डिब्बो को कभी भी प्रयोग नहीं करें तथा डिब्बो को जमीन में गाड देवें।
13. प्रयोग किये जाने वाले कीटनाशको का सही लेखा–जोखा रखें।

उपरोक्त तकनीकी जानकारी सांकेतिक है तथा परिस्थितियो एवं फसल अवस्था के आधार पर तदानुसार बदलाव किया जा सकता है।

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करे –

राजस्थान ओलिव कल्टीवेशन लिमिटेड

राज्य स्तरीय कृषि प्रबंध संस्थान

कृषि अनुसंधान केन्द्र, दुर्गापुरा, जयपुर

दूरभाष – 0141–2554106

फैक्स – 0141–2553506

ई–मेलः rocl@rajolive.com; sdm@rajolive.com

Chief Operation Offcer
Rajasthan Olive Cultivation Limited
Rajasthan, Jaipur